POLYCOT

Profenofos A.I. 40% + Cypermethrin A.I. 4% EC
Insecticide

Chemical Composition :

Profenofos a.i. (Min. purity 89%)	:	40.00 % w/w
Cypermethrin a.i.(Min. purity 92%)	:	4.00 % w/w
Caster Oil Polyglycol ether (36/40grade)	:	9.75 % w/w
Dodecyl benzene sulphonic acid Calcium Salt	:	5.25 % w/w
Soyabean Oil, epoxydised	:	1.00 % w/w
Solvent C-IX	:	Q.S. to make
Total	:	100.00 % w/w

Recommendation :
Profenofos A.I. 40% + Cypermethrin A.I. 4% E.C. is used for the control of Bollworms on Cotton crops.

Crop	Common Name of the pest	Dosage Per ha. A.I. (gm)	Formulation (ml)	Dilution in water (ltr.)	Waiting period in days spray harvest (in days)
Cotton	Bollworm	440-660	1000-1500	500-1000	14

Plant Protection Equipment: 1) **High volume spraying :** Knapsack sprayer or stirrup pump sprayer with fan type nozzle to ensure droplets for batter pest control. 2) **Low volume spraying :** Motorised knapsack mist-blower cum duster.

STORAGE: 1.The packages containing the insecticide should be stored in separate rooms or premises, away from the rooms or premises used for storing other articles particularly food articles of shall be kept in separate almirahs under lock and key depending upon the quantity and nature of the insecticide. 2.The rooms or premises meant for storing the insecticide shall be well well lit, built, dry, well ventilated and of sufficient dimension to avoid contamination with vapor.

Disposal of Empty Containers: 1. Empty containers should be destroyed, they should be buried in the soils where there is no underground water course. used packages or surplus materials and washings of the insecticides should be disposed off in a safe manner so as to prevent environmental or water pollution. 2. the used packages should not be outside to prevent their re-use. 3. The empty containers should be broken and buried deep in the ground away from the habitation.

Precautions by users: 1) Avoid inhalation and skin contact while diluting because of spillage or splashes. Do not mix with bare hands. 2)The users should use full protective clothing which includes rubber gloves, rubber boots. Face should be covered with dust mask or respirator and an overall or rubber apron hood or hat. 3) Use in high concentrations with low and ultra low volume application equipment is dangerous and should be avoided.

Limitations for use: Do not use in those situations if there is possibility or harmingbees and fish, live stock, game, or wild animals and birds.

Sympotoms of poisoning : The early symptoms may be a combination of headache, tightness in chest, vomiting, burred vision, non-reactive pin point pulpits, salivation, nausea, diarrhoea and abdominal cramps. inhalation: Increased nasal and trachel secretion.

First aid measures : Remove patient to fresh air, induce vomiting by ticking the back of throat, Wash contaminated skin with soap and water.

Drug Therapy : Atropinize the patient immediately and maintain full atropinization by repeated doses of 2 to 4 mg at 5 to 10 minutes interval for hours together. The need for further administration is indicated by the continuance of symptom. As much as 25 to 50 mg be required in a day. The axtent of salivation is a useful criterion to follow in adjusting the dosage of atropine . Administer 1-2 gm of 2-pyridine-2-aldoxime-N-methyliodide (2-PAM) dissolved in 10 cc of distilled water and injected intravenously (very slowly taking 10-15 minutes).

Caution: Not to be used on crops other than specified on this Label / Leaflet. Dangerous to re-use empty containers.

पॉलीकॉट

प्रोफेनोफोस सक्रिय तत्व 40% + साईपरमेथ्रिन सक्रिय तत्व 4% ई.सी.
कीटनाशक

रसायनिक संरचना :

प्रोफेनोफोस ए.आइ. (न्यूनतम शुद्धता ८९%)	४०.००% व/व
साईपरमेथ्रिन ए.आइ. (न्यूनतम शुद्धता ९२%)	४.००% व/व
कैस्टर ऑयल पोली ग्लायकोल ईथर(३६/४० ग्रेड)	९.७५% व/व
डोडीसाइल बेन्जीन सल्फोनिक एसिड-कैल्शियम लवण	५.२५% व/व
सोयाबीन तेल-एपोक्सीडाईज्ड	१.००% व/व
सोल्वेंट सी-१ बनाने के लिए	क्यू.एस.
कुल :	१००.००% व/व

सिफारिश :
प्रोफेनोफोस सक्रिय तत्व ४०%+ साईपरमेथ्रिन सक्रिय तत्व ४% ई.सी. कपास में होने वाले डोडे की सुडियों की रोकथाम के लिये प्रभावकारी है।

संस्तुति :

फसल	कीटक का सामान्य नाम	प्रति हेक्टर मात्रा स.त. (ग्राम%)	संस्तुति (मि.ली)	पानी का घोल (लिटर)	आखरी छिड़काव व कटाई के बीच का समय (दिन)
कपास	डोडे की सुंडीयाँ	४४०-६००	१०००-१५००	५००-१०००	१४

पौध सुरक्षा यंत्र : १. तेज मात्रा में छिड़काव के लिये : नैपसैक छिड़काव यंत्र, स्टिरेरअप छिड़काव यंत्र जिसके साथ फैन जैसा नोजल लगा हो जिससे की कीटों की प्रभावकारी रोकथाम हो सके। **२. कम मात्रा में छिड़काव के लिये :** मशीन चालित नैपसैक मिस्ट ब्लोयर कम डस्टर

विषाक्तता : बताई गई मात्रा में प्रयोग करने पर कोई विषाक्तता नहीं पाई गई।

संग्रहण : १. कीटनाशक के डिब्बों का संग्रहण अलग कमरे या स्थान पर, अन्य वस्तुओं विशेषकर खाद्य पदार्थों के संग्रहण कक्ष से दूर किया जाना चाहिए अथवा खरपतवार नाशक की मात्रा और स्वभाव पर निर्भर करते हुए डिब्बों को अलग अलमारी में ताला-चाबी लगा कर करें। २. कीटनाशक के डिब्बों का संग्रहण कक्ष या स्थान रोशनीदार, मजबूत, शुश्क ठंडा, हवादार तथा पर्याप्त लम्बाई चौड़ाई का होना चाहिये जिसमें वाष्प द्वारा प्रदूषण ना हो।

खाली डिब्बों का निपटारा : १. खाली डिब्बों को नष्ट कर दें तथा उन्हें जमीन में गाढ़ दें जहाँ कोई भूमिगत जल स्रोत नहीं हो। खाली डिब्बे या बचे हुए सामान, कीटनाशक की धोवन का निपटारा सावधानीपूर्वक करें जिससे पर्यावरण या पानी प्रदूषण नहीं हो। २. खाली डिब्बों का पुनः प्रयोग रोकने के लिये उन्हें बाहर नहीं छोड़ें। ३. खाली डिब्बों को तोड़कर आबादी से दूर जमीन में गाढ़ दें।

प्रयोगकर्ता द्वारा सावधानियाँ : १. छीटों द्वारा त्वचा पर न लगने दें तथा श्वास द्वारा अंदर न जाने दें। नंगे हाथों से मत मिलाऐं। २. प्रयोगकर्ता को पूर्णतया सुरक्षात्मक कपडे जैसे – रबर के दस्ताने, मुँह को ढ़कें या डस्ट मास्क या ओवरआल या रबर का ऐपरेन, हुड, या टोप आदि का प्रयोग करना चाहिए। ३. तेज शक्ति में अधिक या अत्याधिक कम मात्रा छिड़काव यंत्रों का प्रयोग खतरनाक है तथा इसका प्रयोग न करें।

प्रयोग की सावधानियाँ : ऐसी स्थितियों में प्रयोग मत करें जहाँ मधुमक्खियों, मछलियों, जीव-जन्तुयों, जंगली व पालतू पशु-पक्षियों को हानि पहुँचने की संभावना हो।

विष लक्षण : प्रारंभिक विष लक्षण इन सब का मिला जुला रूप हो सकते है – सिरदर्द, सिर चकराना, पेट दर्द, उल्टी आना, पसीना आना, कमजोरी, मांस चटकना, आँखों में अंधेरा छाना आदि।

सांस के साथ अंदर जाने पर – नाक व गले से अधिक पानी बहना।

प्राथमिक चिकित्सा : रोगी को खुली हवा में ले जायें। गले के पीछे गुदगुदी करावर उल्टी करायें। जब तक उल्टी साफ नहीं हो, इसे दोहराएं। प्रयोग के बाद दूषित त्वचा को साबुन और पानी से अच्छी तरह धोयें।

चिकित्सा विधि : १. रोगी को तुरंत एट्रोपिन दें। लगातार कई घंटों तक ५-१० मिनट के अन्तराल पर २-४ मि.ग्रा. दवा की मात्रा देकर रोगी को एट्रोपीनाईज रखें। लक्षणों के जारी रहने के अनुसार दवा की मात्रा निर्धारित करें। एक दिन में २५-५० मि.ग्रा. दवा का प्रयोग करना पड़ सकता है। लार की मात्रा के अनुसार दवा का मात्रा निर्धारित करना उपयोगी है। २. १० सी.सी. डिस्टिल्ड पानी में मिलाकर १-२ ग्राम २-पाईरीडीन-२-एल्डोजीमि-एन-मिथैल-ओड़ीन (२ पी.ए.एम) दवा नसों में प्रवेश कराये। इसे बहुत धीरे-धीरे १०-१५ मिनट का समय देकर करें।

सावधान: इस लेबल/ लीफ़लेट पर निर्दिष्ट फसलों के अलावा अन्य फसलों पर इस्तेमाल न करें। खाली डिब्बों का दुबारा इस्तेमाल करना खतरनाक है।

पॉलीकॉट

प्रोफेनोफॉस स.त. ४०% + सायपरमेथ्रिन स.त. ४% ई.सी.
कीटकनाशक

उरासायनिक संरचना:

प्रोफेनोफॉस स.त. (न्यून. शुद्धता ८९%)	:	४०.०००% व/व
सायपरमेथ्रिन स.त. (न्यून. शुद्धता ९२%)	:	४.०००% व/व
कॅस्टर ऑईल पोली ग्लायकोल इथर(३६/४० ग्रेड)	:	९.७५०% व/व
डोडीसाइल बेंजीन सल्फोनिक ॲसिड कॅल्शियम सॉल्ट	:	५.२५०% व/व
सोयाबीन ऑईल, इपॉक्सीडाइज्ड्	:	१.०००% व/व
सॉल्वंट सी - ९	:	पुरेसे प्रमाण
एकूण	:	१००.०००% व/व

शिफारस:
प्रोफेनोफॉस स.त. ४०% + सायपरमेथ्रिन स.त. ४% ई.सी चा वापर कपाशी पीकावरील बोंडअळीच्या नियंत्रणासाठी केला जातो.

संस्तुति :

पीक	कीटकाचे सामान्य नाव	प्रमाण/हेक्टर स. त. (ग्रॅम)	द्रावण (मि.ली.)	सौम्य करण्यासाठी पाणी (लिटर)	शेवटची फवारणी ते काढणी कापणी मधिल वाट पहाण्याचा कालावधि
कापूस	बोंडअळी	४४० - ६६०	१००० - १५००	५०० - १०००	१४

रोप सुरक्षा उपकरणे: १) उच्च दाबाचे फवारणी यंत्र : नॅपसॅक स्प्रेयर वा स्टीअरप पंप स्प्रेयर फॅन सारखे नोझल असलेले जेणे करून कीटक नियंत्रणासाठी उत्तम ड्रापलेट. **२) कमी दाबाचे फवारणी यंत्र :** मोटराइज्ड नॅपसॅक मिस्ट-ब्लोअर कम डस्टर.

सादवण: १) हे कीटकनाशक असलेली पॅकेजिसची साठवण खोलीत वा जागेत, इतर साहित्य साठविण्याच्या खोल्या व जागा व वेगळ्या कपाटात त्याच्या प्रमाण व प्रकारानुसार कडी कुलपात ठेवावे. २) ह्या कीटकनाशकाची साठवण करण्याची खोली वा जागा उत्तम बांधणीची, भरपूर उजेडाची, कोरडी, हवेशीर आणि पूरेशी लांब रुंद असावी जेणेकरून वाफेने होणारे प्रदुषण टळेल.

रिकाम्या डब्यांची विल्हेवाट : १) रिकामी डबे नष्ट करावेत, ते अशा ठिकाणी जमिनीत पुरावेत जेथे पाण्याचे झरे नसतील वापरलेले पॅकेजीस वा उरलेले साहित्य आणि कीटकनाशकाच्या धुवणाचे पाणी ह्यांची विल्हेवाट पर्यावरण व पाणी प्रदुषित होणार नाही अशा सुरक्षित प्रकारे लावावी. २) वापरलेले पॅकेजिस उघड्यावर टाकू नये म्हणजे त्याचा पुर्नवापर होणार नाही. ३) रिकामी डबे मोडून-तोडून मनुष्यवस्तीपासून दूर जमिनीत खोलवर पुरावेत.

खबरदारी: १. हुंगू नका. द्रावण तयार करताना सांडल्यामुळेव तुषार उडून त्याचा संपर्क न होण्याची काळजी घ्या. उघड्या हातानी मिश्रण करू नका. २. द्रावण तयार करताना वापरदारानेसंरक्षक पोषाख म्हणजे. रबरी हाथमोजे, बूट, मुखवटा किंवा धूळ निवारक मुखवटा, ओव्हरोल, रबरी ॲप्रन हुड किंवा हॅट असा पोषाख करावा. ३. तीव्र शक्तीचेद्रावण कमी आणि अति प्रमाणात फवारणाऱ्या उपकरणांनी फवारणेधोक्याचेआहेम्हणून तसेफवारू नये.

वापरासाठी मर्यादा व सावधगिरी: जर मधमाशा, मत्स्यपालन, पाळीव प्राणी, खेळाची मैदाने, जंगली पक्षी आणि प्राणी ह्यांना नुकसान होण्याची संभावना असेल अशा ठिकाणी फवारू नये.

विषबाधेची लक्षणे : सुरुवातीची लक्षणे म्हणजे डोके दुखणे, छातीत तानल्यासारखे वाटणे, उल्टी, घुस्सर दिसणे, लाळ गळणे, मळमळ, अतिसार आणि पोटात पेटका येणे अशी मिळती जूळती लक्षणे दिसून येतात. श्वासद्वारे आत गेल्यास : नाक व श्वासनलिकेतून प्रवाहित.

प्रथमोपचार : रूग्णास मोकळ्या हवेत आणा, घशात बोट घालून उल्टी करवावी. दूषित त्वचा साबण आणि पाण्याने धुवा.

जीर: शिरेमध्ये ॲट्रोपिन सल्फेटचे इंजेक्शन देऊन रोग्याला तात्काळ ॲट्रोपिनाइझ करा आणि कित्येक तास ५ ते १० मिनिटांच्या अंतराने २ ते ४ मिग्रॅ. ची मात्रा पुन्हा पुन्हा देत रहा. ॲट्रोपिनच्या कार्यावाहीची पुढील गरज ही लक्षणांच्या सातत्यावर ठरवावी. दिवसभरात जास्तीत जास्त २५ ते ५० मिग्रॅ. ॲट्रोपिन दिले जाणे आवश्यक असू शकेल. ॲट्रोपिनच्या मात्रेचे प्रमाण ठरवताना लाळ सुटण्याचे प्रमाण हा एक महत्वाचा निकष आहे. १-२ ग्रॅम २-पायरीडेन-२-अल्डोक्झाइम-एन-मिथाइल आयोडाइड (२ पीएम) १० सीसी डिस्टिल बॉटलमध्ये विरघळवून (१०-१५ मिनिटांच्या अंतराने) ते शिरेमध्ये टोचत रहावे.

सावधान: या लेबल/माहिती पत्रकावर निर्देश केलेल्या पीकांव्यतिरिक्त अन्य पीकांवर उपयोग करू नये. रिकामे डबे पुन्हा वापरणे धोकादायक आहे.

પોલીકૉટ

પ્રોફેનોફોસ સ.ત. 40% + સાયપરમેથ્રિન સ.ત. 4% ઈ. સી.
જંતુનાશક

રાસાયણિક સંયોજન :

પ્રોફેનોફોસ સ.ત.(લઘુતમ શુદ્ધતા ૮૯%)	:	૪૦.૦૦૦% વ/વ
સાયપરમેથ્રિન સ.ત.(લઘુતમ શુદ્ધતા ૯૨%)	:	૪.૦૦૦% વ/વ
કેસ્ટર ઑઈલ પોલી ગ્લાયકોલ ઈથર(૩૬/૪૦ ગ્રેડ)	:	૯.૭૫૦% વ/વ
ડોડીસીલ બેન્ઝીન સલ્ફોનિક એસિડ કૅલ્શિયમ ક્ષાર	:	૫.૨૫૦% વ/વ
સોયાબીન તેલ, એપોક્સીડાઈઝ્ડ	:	૧.૦૦૦% વ/વ
સૉલ્વન્ટ સી-૯	:	ક્યુ.એસ.
કુલ	:	૧૦૦.૦૦% વ/વ

ભલામણો :
કપાસના પાક પર જીંડવાની ઈયળના નિયંત્રણ માટે પ્રોફેનોફોસ સ.ત. ૪૦% + સાયપરમેથ્રિન સ.ત. ૪% ઈ. સી. વાપરવામાં આવે છે.

પાક	જીવાતનું સામાન્ય નામ	માત્રા/હેક્ટર સ.ત. (ગ્રામ)	ફૉર્મ્યુલેશન (મિલિ)	પાણીમાં ઘોળ (લિ.)	છેલ્લા છંટકાવ વચ્ચે પ્રતીક્ષાનો સમય (દિવસો)
કપાસ	બોલવર્મ	૪૪૦-૬૬૦	૧૦૦૦-૧૫૦૦	૫૦૦-૧૦૦૦	૧૪

છોડ સંરક્ષણ ઉપકરણો: ૧) ઉચ્ચ પ્રમાણમાં છંટકાવ : અધિક ઉત્તમ જીવાત નિયંત્રણ માટે ટીપાંઓ સુનિશ્ચિત કરવા માટે નૉઝલ ધરાવતાં સ્ટીરરઅપ અથવા ફૅન ટાઈપ નોઝલ લાગેલું સ્ટરરઅપ પમ્પ સ્પ્રેયર. **૨) ઓછા પ્રમાણમાં છંટકાવ :** મોટરાઈઝ્ડ નૅપસૅક મિસ્ટ-બ્લોઅર કમ ડસ્ટર.

સંગ્રહ: ૧. જંતુનાશક ભરેલાં પૅકેટોને અલગ ખંડો અથવા મકાનોમાં, અન્ય વસ્તુઓના સંગ્રહથી દૂર રાખો, અથવા જંતુનાશકના પ્રકાર અને માત્રા અનુસાર અલગ કબાટોમાં તાળું મારીને રાખો. ૨. સંગ્રહ માટેના ખંડ અથવા મકાનો શૂકા, હવાદાર અને પાકા બાંધેલાં હોવા જોઈએ. તેમાં હવા-પ્રકાશ અને ભીડભાડ પૂરતી હોવી જોઈએ.

ખાલી પાત્રોનો નિકાલ: ૧. ખાલી પાત્રોને નષ્ટ કરી નાખવાં જોઈએ, તેમને જમીનમાં, જ્યાં પાણીના સ્રોત ના હોય ત્યાં, દાટી દેવાં જોઈએ. જંતુનાશકોના વપરાયેલાં પાત્રો અથવા વધેલાં દ્રવ્યણો તથા ધોવાણોનો નિકાલ એ રીતે કરવો જોઈએ કે જેથી પર્યાવરણને અથવા જળનું પ્રદુષણ ન થાય. ૨. વપરાયેલાં પાત્રોનો બહાર, તેમને પુનઃ વપરાશ ના થાય તે માટે ખુલામાં રેહવાં ના જૂકવાં જોઈએ. ૩. ખાલી પાત્રોને તોડી નાખવાં જોઈએ અને માણવસ્તીથી દૂર દાટી દેવાં જોઈએ.

વાપરનારાઓ દ્વારા સાવચેતી: ૧) મંદ કરતી વખતે ઢોળાવા અથવા ઉડવાને કારણે શ્વાસમાં લેવાનું અને ત્વચા સંક્રમ ટાળો. ખુલ્લા હાથે મિશ્રણ કરશો નહીં. ૨) વાપરનારાઓએ સંપૂર્ણ રક્ષણકારક કવચાં પહેરવાં જેમાં રબરનાં મોજાં, રબરનાં બૂટનો સમાવેશ થાય છે. ચહેરો કપડ માસ્ક અથવા રેસ્પિરેટર વડે ઢાંકવો જોઈએ અને ઓવરોલ અથવા રબર ઍપ્રોન, હૂડ અથવા ટૉપ પહેરવાં જોઈએ. ૩) લો અને અલ્ટ્રા લો વૉલ્યુમ ઉપયોગના સાધન વડે ઉચ્ચ સઘ્રયોગમાં ઉપયોગ લોખમભર્યો છે અને તે ટાળવો જોઈએ.

ઉપયોગ માટેની મર્યાદાઓ અને સાવચેતીઓ: જો મધમાખીઓ અને માછલી, ઘોરઢાંખર, શિકારી પ્રાણીઓ, વન્ય પક્ષીઓ અને જાનવરોને હાનિ થવાની શક્યતા હોય, તો તેવી પરિસ્થિતિઓમાં છંટકો નહીં.

ઝેર થવાનાં લક્ષણો : શરૂઆતનાં લક્ષણોમાં માથાનો દુખાવા, છાતીમાં ઠાણ, ઊલટી, ધૂંધળી દૃષ્ટિ, બિન-પ્રતિક્રિયાકારક પિન પॉઈન્ટ પુલ્પિટ્સ, લાળ પડવી, ઊબકા, અતિસાર અને પેટદુખ. શ્વાસનતંત્ર: નાક અને શ્વાસનળીમાંથી પ્રવાહિતા.

પ્રાથમિક સારવાર: દર્દીને ખુલ્લી તાજી હવામાં લઈ જવો, ગળામાં પાછળના ભાગે આંગળીથી મમળાવીને ઊલટી કરાવવાની પ્રયત્ન કરવો. દૂષિત ત્વચા સાબુ અને પાણીથી ધોઈ નાખવી.

વિષ પ્રતિકારક: એટલી અસર થઈ હોય તેવી વ્યક્તિને તુરંત જ તકમાં એટ્રોપિન સલ્ફેટ સલાયો અને એટલી અસર ચાલુ રહે ત્યાં સુધી ૫ થી ૧૦ મિનિટના અંતરે ૬લાકો સુધી ૨ થી ૪ મિ.ગ્રા. ની માત્રા આપતાં દહીને પૂર્ણ રૂપે એટ્રોપિનાઈઝ કરો. એટલી લક્ષણો સતત ચાલુ રહે તો આગળ ઉપર વધુ એટ્રોપિન આપવાની જરૂર રહે છે. તે બોલ દિવસમાં વધુમાં વધુ ૨૫ થી ૫૦ મિ.ગ્રા. સુધી આપી શકાય. એટ્રોપિનની માત્રા નક્કી કરવા માટે સતત લાળ ગળવાનું લક્ષણ કસોટીરૂપ લેખી શકાય. ૧૦ લીટી ડિસ્ટિલ કરેલા પાણીમાં ૧-૨ ગ્રામ ૥ટલું ૨- પાયરિડાઈન-૨-ઍલ્ડોક્સાઈમ-એન-મિથાઈલ આયોડાઈડ (૨ પીએએમ) તકમાં ઈંજેક્શન દ્વારા (ખૂબ જ ધીમે ધીમે ૧૦-૧૫ મિનિટે) સલાવો.

સાવધાની: આ લેબલ/લીફલેટ પર જણાવાયેલા પાકો સિવાય અન્ય પાકો પર ઉપયોગ કરવો નહીં. ખાલી ડબ્બાઓ ફરીથી ઉપયોગ કરવાનું ખતરનાક છે.

ᱯᱚᱞᱤᱠᱚᱴ

ᱯᱨᱚᱯᱷᱚᱱᱚᱯᱷᱚᱥ ᱵᱷ.ᱵᱷ. 40% + ᱥᱟᱭᱯᱚᱨᱨᱤᱛᱷᱨᱤᱱ ᱵᱷ.ᱵᱷ. 4% ᱤ.ᱵᱤ.
ᱠᱤᱴᱚᱠᱚᱱᱟᱥᱤᱱᱤ

**ᱚᱞᱤᱯᱚᱨᱤᱠᱚᱞ ᱵᱷᱟᱞᱤᱛᱚᱞᱚᱞᱤᱛᱚᱞᱚᱞᱤᱛᱚᱞᱚ

ಪೆಲಿಕೆಟ

ಪ್ರೊಫೆನೊಫೊಸ್ ಸ.ಪ್ರ. ೪೦% + ಸೈಪರ್‌ಮೆಥ್ರಿನ್ ಸ.ಪ್ರ. ೪% ಇಸಿ

ಕೀಟನಾಶಕ

ರಾಸಾಯನಿಕ ಮಿಶ್ರಣ:

ಪ್ರೊಫೆನೊಫೊಸ್ ಸಾಂದ್ರತೆ	:	೪೦.೦೦೦ ಡಬ್ಲ್ಯೂ/ಡಬ್ಲ್ಯೂ
ಸೈಪರ್‌ಮೆಥ್ರಿನ್ ಸ.ಪ್ರ. (ಕನಿಷ್ಠ ಶುದ್ಧತೆ ೯೨.೫)	:	೪.೦೦೦ ಡಬ್ಲ್ಯೂ/ಡಬ್ಲ್ಯೂ
ಕ್ಯಾಲ್ಸಿಯಂ ಆಯಿಲ್ ಕಾಲ್ಕರೇಯರ್ (೩೬/೪೦ ಗ್ರೇಡ್)	:	೯.೭೫೦ ಡಬ್ಲ್ಯೂ/ಡಬ್ಲ್ಯೂ
ಡೊಡೆಸಿಲ್ ಬೆಂಜೀನ್ ಸಲ್ಫೋನಿಕ್ ಆಸಿಡ್ ಕ್ಯಾಲ್ಸಿಯಂ ಸಾಲ್ಟ್	:	೫.೨೫೦ ಡಬ್ಲ್ಯೂ/ಡಬ್ಲ್ಯೂ
ಸೋಯಾಬೀನ್ ಆಯಿಲ್ ಎಮಲ್ಸಿಫೈಯರ್ IX	:	೧.೦೦೦ ಡಬ್ಲ್ಯೂ/ಡಬ್ಲ್ಯೂ
ಸಾಲ್ವೆಂಟ್ ಸ-IX	:	ಕೂ.ಎಸ್.
ಒಟ್ಟು	:	೧೦೦.೦೦೦ ಡಬ್ಲ್ಯೂ/ಡಬ್ಲ್ಯೂ

ತಿಳಿವಳಿಕೆ:

ಪ್ರೊಫೆನೊಫೊಸ್ ಸ.ಪ್ರ. ೪೦% + ಸೈಪರ್‌ಮೆಥ್ರಿನ್ ಸ.ಪ್ರ. ೪% ಇಸಿಯನ್ನು ಹತ್ತಿ ಬೆಳೆಯ ಕಾಯಿಕೊರೆಹುಳಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸಲು ಬಳಸಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬೆಳೆ(ಗಳು)	ಕೀಟದ ಸಾಮಾನ್ಯ ಹೆಸರು	ಹೆಕ್ಟೇರಿಗೂಡಿದ ಪ್ರಮಾಣ			ಕೊಯಿಯ ನಿಂತಿರಬೇಕಾದ ಬಳಿಕ ಕಟಾವಿಗೆ ಕಾಯ ಬೇಕಾದ ಅವಧಿ (ದಿನಗಳು)
		ಸ.ಪ್ರ. (ಗ್ರಾ.)	ಶ್ರಾಮರ್-ಲೀಟರ್ (ಮಿ.ಲೀ.)	ತೆಳುನೊಗಲು ನೀರು (ಲೀಟರ್)	
ಹತ್ತಿ	ಕಾಯಿಕೊರೆತ ಸಂಕೀರ್ಣ	440-660	1000-1500	500-1000	14

ಸ್ಪ್ರೆ ಸಂಯೋಜಕ ಬಳಕೆವಳಿ: 1. ಅಧಿಕ ಪ್ರಮಾಣದ ಸಿಂಥೆಟಿಕ್‌ನಾಗಿ ರಬ್ಬರು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕಾಗಿ ಹನಗಳು ಸಾಗುವುದನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸುವ ಸಲುವಾಗಿ ಇನ್ನಾ ಟೈಪ್ ನಾಸಲ್ ಆಕ್ಸೆಸರಿಯ ನ್ಯಾಪ್‌ಸ್ಯಾಕ್ ಸ್ಪ್ರಯರ್ ಅಥವಾ ಸ್ಪ್ರಯರ್ ಬಂಪರ್ ಸ್ಪ್ರಯರ್. 2. ಅಲ್ಪಪ್ರಮಾಣದ ಸಿಂಥೆಟಿಕ್‌ನಾಗಿ: ಮೋಟರೈಸ್ಡ್ ನ್ಯಾಪ್‌ಸ್ಯಾಕ್ ಮಿಸ್ಟ್-ಬ್ಲೋಯರ್ ಕಾಯ ಚಾಲ್ಡರ್

ಶೇಖರಣೆ: 1. ಕೀಟನಾಶಕದ ಧಾರಕಗಳನ್ನು ಇತರ ವಸ್ತುಗಳನ್ನಿರಲಿಸದೆ ಕೋಣೆ ಅಥವಾ ಕಟ್ಟಡದಿಂದ ದೂರದಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಕೋಣೆ ಅಥವಾ ಕಟ್ಟಡದಲ್ಲಿ ಶೇಖರಿಸಬೇಕು. ಅಥವಾ ಕೀಟನಾಶಕದ ಪ್ರಮಾಣ ಹಾಗೂ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಕಪಾಟುಗಳನ್ನು ಬೀಗಮಾಡಿ ಭದ್ರವಾಗಿರಬೇಕು. 2. ಕೀಟನಾಶಕವನ್ನು ಶೇಖರಿಸುವಾಗ ಕೋಣೆ ಅಥವಾ ಕಟ್ಟಡವನ್ನು ಗಟ್ಟಿ ಮುಚ್ಚಿ ಕಟ್ಟಾಗಿದ್ದು ಅವರಲ್ಲಿ ಗಾಳಿ- ಬೆಳಕು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬರುವಂತಿರಬೇಕು ಮತ್ತು ಅವುಗಳಿಂದ ಪ್ರಮಾಣವಾಗದಂತೆ ಸಾಕಷ್ಟು ಎಚ್ಚರವಾಗಿಯೂ ಇರಬೇಕು.

ಮಾಲಿ ಕಂಟೇನರುಗಳ ವಿಸರ್ಜನೆ: 1. ಮಾಲಿ ಕಂಟೇನರುಗಳನ್ನು ಶಾಶ್ವತವಾಗಿರಬೇಕು ಹಾಗೂ ಅವುಗಳನ್ನು ನೀರಿನ ಸೆಲೆ ಇಲ್ಲದ ಜಾಗದಲ್ಲಿ ಶೇಖರಿಸಬೇಕು. ಬಳಿಯಿಟ್ಟ ಪ್ಯಾಕೇಜುಗಳನ್ನು ಅಥವಾ ಮಿಳ್ಳಿಗಳ ಪರಿಷ್ಕರ ಮತ್ತು ಕೀಟನಾಶಕದ ಹೊಳೆ ನೀರನ್ನು, ಬಲ ಹಾಗೂ ಪರಿಸರ ಪ್ರದೂಷಣೆಗೆ ಆಸ್ಪದವಾಗದಂತೆ ಸುರಕ್ಷಿತ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ವಿಲೇವಾರಿ ಮಾಡಬೇಕು. 2. ಬಳಿಗಡ ಪ್ಯಾಕೇಜುಗಳು ಮರುಬಳಕೆಯಾಗದಂತೆ ಮಾಡಲು ಅವುಗಳನ್ನು ಜಾಗರಿಯ ಹೊರಗೆ ಬಿಟ್ಟುಬಿಡಬಾರದು. 3. ಮಾಲಿ ಪ್ಯಾಕೇಜುಗಳನ್ನು ಒಡೆದು, ಒನಪಗಳಿ ಇಲ್ಲದ ಜಾಗದಲ್ಲಿಗೂಂಡಿ ಕೋಡಿ ಹೂಳಬೇಕು.

ಬಳಸುವವರು ಜಾಗರೂಕತೆ ಮುಂಜಾಗ್ರತೆಗಳು: 1. ಎರಬುವೆ ಮೂಲಕ, ಸೋರುವ ಮೂಲಕ ಕೀಟನಾಶಕವು ಉಸಿರಾಟಗಳಿಗೆ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳದಂತೆ, ಚರ್ಮಕ್ಕೆ ಸಂಪರ್ಕಗೊಳ್ಳದಂತೆ ಎಚ್ಚರವಹಿಸಿರಿ. ಬಳಗೆಯಲ್ಲಿ ಎಚ್ಚ ಮಾಡಬೇಡಿ 2. ರಬ್ಬರ್ ಕೈಚೀಲಗಳು, ರಬ್ಬರ್ ಬೂಟ್ಸ್ ಮೊಗಣವು ಅಥವಾ ರೆಯಿಟಿಕರ್, ಸಾದ್ಯಂತ ಉಡುಗೆ ಅಥವಾ ರಬ್ಬರ್ ಬಟ್ಟೆ, ಹಾಗೆ ಅಥವಾ ಟೊಪ್ಪಿಯನ್ನೆಳಗೊಂಡ ಪೂರ್ಣ ರಕ್ಷಣಾ ಉಡುಗೆಯನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುವವರು ಬಳಸಬೇಕು. 3. ಅಲ್ಪ ಅಥವಾ ಅತ್ಯಲ್ಪ ಪ್ರಮಾಣದ ಬಳಕೆಯ ಸಾಧನಗಳಲ್ಲಿ ಅಧಿಕ ಸಾರತೆಯ ದ್ರಾವಣ ಬಳಸುವುದು ಅಪಾಯಕಾರಿಯಾದ್ದರಿಂದ ಹೀಗೆ ಮಾಡಬಾರದು.

ಆಕಸ್ಮಿಕ ಪರಿಹಾರ ಹಾಗೂ ಎಚ್ಚರಿಕೆಗಳು: 1. ಚೀನು ನೋಣಗಳು, ಮೀನು, ಜಾನುವಾರು, ಬೇಟೆಯ ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಮತ್ತು ಮೃಗಪಕ್ಷಿಗಳಿಗಾಗಿಯೂ ಸಾಂದರ್ಭಿಕವಾಗಿ ಅಪಾಯಕಾರಿಯಾದ್ದರಿಂದ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಭಯಪಡಿರಿ.

ವಿಷಪೂರಿತ ಲಕ್ಷಣಗಳು: ಅದಿಯ ರೋಗಿ ಲಕ್ಷಣಗಳು ಜೊತೆ ಜೊತೆಯಾಗಿ ಮೆಗಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದು. ತಲೆನೋವು, ಎದೆ ಬಿಗಿ, ಮೂಗು ದ್ರವ್ಯ, ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾರಹಿತ ಒನ್‌ಪ್ಯಾಟ್ ಪರಾಟಿಗಳು, ಜೊಲ್ಲು ಸುರಿತ, ವಾಕರಿಕೆ, ಕಫಿಗಾರ ಮತ್ತು ಹೊಟ್ಟೆನೆಡೆ, ಬಳಿಗಡಲ್ಲಿ-ಕೆಳಿಗಡಲ್ಲಿ ಮೂಗು ಮತ್ತು ಶ್ವಾಸನಾಳದಲ್ಲಿನ್ನದ.

ಪ್ರಥಮ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯ ಕ್ರಮಗಳು: ರೋಗಿಯನ್ನು ತಾಜಾ ಗಾಳಿ ಇರುವಲ್ಲಿಗೆ ಒಯ್ಯಿರಿ. ಗಂಟಲಿನ ಸಿಂಬಿಯಿಂದಾಗಿ ಕೆರೆದು ವಾಂತಿ ಮಾಡಲು ಪ್ರೇರಿಸಿರಿ. ಮಲಿನಗೊಂಡ ಚರ್ಮ ಭಾಗವನ್ನು ಸಾಬೂನು ಹಾಕಿ ಹೇರಳ ನೀರಿನಿಂದ ತೊಳೆದುಹಾಕಿರಿ.

**ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯ